शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447

Year -1
Vol -5
March
2024

21वीं सदी की कहानियों में मानव मूल्यों का विश्लेषण

स्वामीदीन प्रजापति
शोध छात्र - हिंदी विभाग
शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

शोध सार

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य की जिजीविषा इस परिवर्तन के साथ, बदलते परिवेश के साथ बदलती रहती है जीवन के यथार्थ के साथ मनुष्य जीवन को साहित्यकार विश्लेषित करता है। मूल्य अवधारणा का प्रश्न आज के बदले हुए परिवेश के साथ हिंदी उपन्यासों में बराबर चित्रित हो रहा है। मूल्यवादी दृष्टि रखकर हिंदी उपन्यासकार परिवेशगत जीवन मूल्यों को बदलते संदर्भों के साथ व्यक्त कर रहें हैं। भारतीय जीवनमूल्य और पश्चिम प्रभाव से आए बदलाव के कारण होने वाली संघर्षमय स्थिति का प्रतिबिंब इक्कीसवीं सदी की कहानियों में बराबर अंकित हो रहा है। बदलते हुए जीवनमूल्यों का चित्रण इस सदी के कहानीकारों ने यथार्थता के साथ बड़े साहस के साथ सूक्ष्म ढंग से किया है।

बीज शब्द

यथार्थता, विश्लेषित, लोकप्रियता, चित्रित, परिवेशगत, जीवन मूल्य।

भूमिका

हिंदी साहित्य में गद्य की एक महत्वपूर्ण विद्या के रूप में कहानी आधुनिक युग की लोकप्रियता पर कायम हैं। प्रेमचंद तो कहानी को मानवजीवन का चित्र मानते हैं। प्रेमचंद हिंदी कहानी के क्षेत्र में एक ऐसे उच्च शिखर हैं, जहाँ से खडे होकर पाठकीय संवेदना और उनके रूपकार के संबंध में सुविधापूर्वक विचार किया जा सकता है। इस दृष्टि से हिंदी कहानी के विकास को तीन कालों में बाँटा जा सकता है-

१) प्रेमचंद पूर्व कहानी (१८७० से १९१६ तक)

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -5
March
2024

२) प्रेमचंदकालीन कहानी (१९१६ से १९३६ तक)

(३) प्रेमचंदोत्तर कहानी (१९३६ से अब तक)

शोध विस्तार

हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग से ही उपन्यास और कहानी विधा का सूत्रपात माना जाता है। उस समय अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं के अनूदित उपन्यासों एवं कहानियों का विकास हुआ। इस तरह की कहानियां मात्र मनोरंजन के लिए लिखी तिलस्मी या ऐय्यारी घटनाओं का सिलसिला मात्र रही हैं। प्रेमचंद के आगमन से हिंदी कहानियों का वास्तविक एवं क्रमबद्ध विकास हुआ। प्रेमचंद ने सामाजिक, चरित्र प्रधान कहानियों का सृजन नए ढंग से किया है - "प्रेमचंद जी ने सभी प्रकार के मानवीय मूल्यों को उकेरा है। समस्याओं के यथार्थ चित्रण के अतिरिक्त उनकी पारस्परिक एकता और अनेक कष्टों के उलझन द्वारा उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है।"[1] मानवीय एवं सामाजिक यथार्थ को प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया और कहानी विधा को विशेष लोकप्रिय बना दिया। देश के नवजागरण से नवयुग की समस्याओं और भाव-विचार से प्रेमचंद और उनके समकालीन अन्य लेखकों ने परिचित करा दिया। कथा साहित्य की दृष्टि से प्रेमचंद काल का बड़ा योगदान रहा है। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियां-पंच परमेश्वर, ठाकुर का कुआं, ईदगाह, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी और कफ़न आदि में अनेक गतिशील चरित्र अंकित हुए हैं। जो गाँव और शहर की स्थिति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं। यहाँ नीच से नीच पात्र में भी मानवता विद्यमान हैं। सभी पात्र स्वाभाविक एवं व्यक्तित्वपूर्ण हैं। प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी साहित्य मार्क्सवादी चेतना से प्रेरित रहा व्यक्ति और समाज को नए युगीन परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा। प्रेमचंदोत्तर कहानियां अपनी विशिष्ट विचारधारा और सर्जनात्मक शक्ति से स्वतंत्र शैली में लिखी जाने लगी। कहानी सृजन परंपरा में भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ जैसे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, समाजवादी,आँचलिक, व्यक्तिवादी तथा ऐतिहासिक आदि में लिखी जाने लगी। साम्यवादी कहानीकारों में डॉ.रांगेय राघव उल्लेखनीय है। उनकी कहानियों की विशेषता के आधार पर यह कहा भी गया है - "मनोवैज्ञानिक कहानियों में पात्र अंतर्मुख होते हैं और जो पुरातन नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अवहेलना करने नए मूल्यों के अभाव में व्यक्ति स्वातंत्र्य की घोषणा करते हैं।"[2] जैनेंद्र जी ने हिंदी मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की है। अमृतलाल नागर जी ने

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर समाज के सभी परिवर्तनों, जीवनमूल्यों को बारीकी से परखा है। प्रेमचंदजी ने समकालीन मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति, मूल्यसंकट, नैतिक दुर्बलता, वैचारिक ढुलमुलपन आदि का अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक और विश्वसनीय अंकन किया है। देश के नवजागरण से नवयुग की समस्याओं और भाव-विचार से प्रेमचंद और उनके समकालीन अन्य लेखकों ने परिचित करा दिया। उपन्यास साहित्य की दृष्टि से प्रेमचंदकाल का बड़ा योगदान रहा है।

"इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारों ने नवीन परिस्थितियों की जटिलता, मानसिकता का नया रूप प्रस्तुत किया है। उपन्यास के विस्तृत फलक पर लेखक बडी कुशलता से नई परिस्थिति और नई समस्याओं को अंकित कर सकता है।"[3] निरंतर बदलने वाली परिस्थिति, उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण हिंदी उपन्यासकारों की सर्जनात्मकता की नई भावभूमि पैदा कर देती है।

21वीं सदी तक आते आते नए जीवन दर्शन निर्मित हुए। पैसा और उपभोग की स्थिति से मूल्यों का विघटन, उच्चतम जीवन की लालसा, स्वार्थी वृत्ति और आर्थिक, सांस्कृतिक, पूँजीवादी प्रवृत्ति से अनेक चुनौतियाँ सामने आयी । पूँजी और बाजार के संजाल में चौंधियाँ देने वाली चकाचौंध ने तो मानो मनुष्य को मानवीय संवेदनाओं से अलग ही कर दिया है।

"मानवीय जीवन में मूल्यों का महत्व अनन्य साधारण है मूल्यों के आधार पर ही मनुष्य सही-गलत का चुनाव करता है। समाज की आवश्यकता के अनुसार परंपरा से ये मूल्य बनते गए है जो नैतिकता के धरातल पर आर्थिक एवं सामाजिक सरोकारों के आधार पर तय किये जाते थे।[4] इन नीतिमूल्यों को धार्मिकता का संबल भी प्राप्त था । इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए कहानी विधा में जीवनमूल्यों का चित्रण हिंदी साहित्य में लेखकों ने किस तरह से किया हैं और इसे देखते हुए इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में इसका प्रतिबिंब कैसे अंकित हुआ है इसके विश्लेषण का प्रयास यहाँ किया गया है।

समय की निरंतरता में भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के साथ इक्कीसवी सदी नई चुनौतियों के साथ आ गयी हैं। इन सभी चुनौतियों से प्राचीन और नवीन मूल्यों में एक संघर्ष की स्थिति पनपने लगी है। हिंदी साहित्य में इन सारी स्थितियों को बराबर चित्रित किया जा रहा है। हिंदी उपन्यास साहित्य में शैली, शिल्प तथा विषय इस दृष्टि से काफी परिवर्तन हो रहे हैं। शैली की दृष्टि से आत्मकथनात्मक ढंग से लिखा कमल कुमार का 'पासवर्ड' उपन्यास पूरी तरह से आधुनिकता से उत्तराधुनिक स्तर पर पहुँचा है। मनीषा कुलश्रेष्ठ का 'शिगाफ' उपन्यास ब्लाग ई-मेल शैलीद्वारा लिखा है। जिसमें विस्थापन की समस्या चित्रित है। नारी की स्थिति में परिवर्तन एवं विद्रोह की भावना को प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास कुसुम अंसल का 'तापसी' तथा उषा प्रियवंदा का 'अंतर्वंशी'। इसतरह के अनेक उपन्यासों में इक्कीसवी सदी की बदलती तस्वीर चित्रित हुई है। जीवन मूल्यों के सार्थक और सजीव अंकन से ही रचना काल जयी एवं दीर्घजीवी इक्कीसवी सदी का चित्रण करनेवाली अनूदित साहित्य कृतियाँ बुकर पारितोषिक प्राप्त 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्ज, रेडमॅपल रीडिंग अॅवार्ड प्राप्त 'द ब्रेडविनर' इसके ही अन्य हिस्से 'परवाना' 'शौजिया' यह किताबें मैंने पढी। उसके पश्चात हिंदी उपन्यास - सुरेंद्र वर्माजी का मुझे 'चाँद चाहिए' मैत्रेयी पुष्पा का 'विजन' ममता कालिया का 'दौड' जैसे उपन्यास पढे। इन उपन्यासों में व्यक्त आतंक, शोषण, युध्द की त्रासदी, भ्रष्टाचार आदि समस्या तथा भारतीय परिवेश में पूरी तरह से नई संकल्पनाओं को देखकर मुझे अन्य उपन्यास पढने की रूचि उत्पन्न हुई। इसी दौरान मैंने हिंदी के अन्य उपन्यास भी पढे जिसमें कमलकुमार का पासवर्ड'', मनोज सिंह का 'हॉस्टल के पन्नों से' कुसुम अंसल का 'तापसी' उदयप्रकाश का 'पीली छतरीवाली लडकी उषा प्रियवंदा 'अंतर्वंशी' उल्लेखनीय है। इन उपन्यासों में भारतीय परिवेश की बदलती तस्वीर पूरी तरह बडी बेबाकी से चित्रित हुई है। इन्हीं उपन्यासों में बदलते मूल्यों के कारण मानवी जीवन की मानवीय जटिलता एवं उलझनों का चित्रण दिखाई देता है जिससे कहानीकारों ने इस बदलते परिवेश के साथ ही भारतीय मूल्यों को भी बरकरार रखा है या नहीं, मानवीयता को बचाने के लिए भारतीय जीवन मूल्य परंपरा ही हमेशा रहेगी इसका चित्रण 21वी सदी की कहानियों में किया गया है।

भौतिकता की चकाचौंध, पूँजीवाद, बाजारवाद आदि स्थितियों से समकालीन मनुष्य को उच्च आकांक्षाओं के कारण गतिशील दौड में जबरदस्ती से जुडना पड़ रहा है। मनुष्य की

गति सही दिशा में बढ़ने के लिए उसे परंपरागत मूल्यों के साथ नए मूल्य भी अपनाने पडते है। तभी उसके जीवन को सही आकार सफलता प्राप्त हो पाएगी। "इक्कीसवी सदी के कहानीकारों ने आज के जीवन की विसंगति, विडंबनाओं को विवरणात्मक रुप में उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। कहानियों में इस तरह का चित्रण कैसे प्रतिबिंबित हुआ है।"[5] भारतीय मूल्य जैसे 'जीयो और जीने दो' इस तत्व को मानता है। परंतु इक्कीसवी सदी की बदलती प्रवृत्ति में हमारे यह मूल्य पिछड़ रहे हैं। परिवेशगत, विकृति पनपने लगी है। इक्कीसवी सदी की कहानियों में इनका चित्रण कहानीकारों ने नए ढंग एवं विषय की नवीनता के साथ किया है। इन नीतिमूल्यों को धार्मिकता का संबल था। परंतु समय परिवर्तन के साथ साथ वैश्वीकरण के दौर तक आते आते मूल्य घटते जा रहे हैं। सांप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता के कारण मूल्यों के विघटन ही नजर आ रहें है। इस बदलते माहौल का पूरा चित्रण अनेक साहित्यकारों ने किया है।

इक्कीसवी सदी के कहानीकारों ने भूमंडलीकरण के कारण निर्मित इन परिस्थितियों से जूझते मानव का चित्रण कहानियों द्वारा अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि शिक्षा के क्षेत्र में रॅगिंग की समस्या, व्यसनाधीनता, बेरोजगारी, युवा संगठन आदि समस्याओं को मनोज सिंह के उपन्यास 'हॉस्टल के पन्नों से ममता कालिया का 'अंधेरे का ताला', जैसे उपन्यासों में बड़ी सशक्तता के साथ चित्रित किया गया है। कुल मिलाकर इक्कीसवीं सदी तक आते आते भारतीय जीवन मूल्यों की टकराहट से निर्माण विघटन प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए कहानीकारों ने बताया कि जीवन मूल्यो मे आयी गिरावट से जीवन की जटिलता बढती ही जा रही है।

इक्कीसवी सदी तक आते-आते मूल्य, नैतिकता, परंपरा, सांस्कृतिक संदर्भ, काँच के बर्तन की भाँति टूट रहे हैं। समाज जो रूप धारण कर रहा है उससे भिन्न भिन्न वर्गो में जो प्रवृत्तियाँ उभर रही है। उसका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं, बल्कि आवश्यकतानुसार उसके निराकरण की प्रवृत्ति भी कहानीकार प्रस्तुत कर रहें हैं। इक्कीसवी वी सदी की लगभग सभी कहानियों में पूँजी और बाजार के संजाल से चकाचौंध ने मनुष्य को मानवीय संवेदनाओं से बेदखल कर दिया है। समय के बदलाव का प्रभाव साहित्य और समाज पर भी पड़ता है।

रचनाकार इस परिवर्तन को महसूस करता है इसमें जीता है, इसलिए रचनाकार अपने समय का सबसे बड़ा पारखी होता है। इक्कीसवी सदी में राजनीति, अर्थनीति और सामाजिकता में एक अलगाव स्थापित हुआ। इन तीनों परिस्थितियों की गति एवं दिशा अलग रही, जिसमें फँसा आदमी निचले स्तर पर गिरता जा रहा है। तेजी से परिवर्तित पारिवारिक एवं सामाजिक नैतिक मूल्य और उपभोक्तावादी संस्कृति में जन्मा बाजारू मूल्य सर्वशक्तिमान बनता जा रहा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक संदर्भों में मूल्यहीनता का शिकार हम बनते जा रहे है। विश्वव्यापार की संकल्पना ने सारे विश्व को विक्रेता और ग्राहक इन दो वर्गों में बाँट दिया है। ऐसे समय बदलते परिवेश में उपभोक्ता संस्कृति पनप रही है। परिणाम स्वरूप मानवीय संबंधों में दरारे आ रही है। इन सबका चित्रण इक्कीसवी सदी की कहानियों में हो रहा है।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में प्रतिबिंबत बदलते मूल्यों को विश्लेषित करना तथा उपन्यासों में अभिव्यक्त इक्कीसवीं सदी की स्थिति का सटीक वर्णन करना, दृष्टिगोचर होने वाली समस्याओं को उद्घटित करना तथा समाधान ढूँढना ही इन कहानियों का प्रमुख उद्देश्य है। बाजारीकरण, औद्योगिकीकरण से मानवीय संस्कृति एक ग्लोबल व्हिलेज बनती जा रही है। मनुष्य एक दूसरे के बहुत निकट पहुंच रहा है परंतु इससे भारतीय परिवेश में इस नयी भावभूमि से एक नयी संस्कृति पनप रही है। इंटरनेट, मोबाईल जैसी सुविधाऐं जितनी अच्छी है उतनी ही खतरनाक भी साबित हो रही है। साइबर माध्यम के संसाधनों से उत्पन्न जटिलता से आम आदमी बिखरता जा रहा है उसकी इस स्थिति का मानसिक विश्लेषण भी इस शोधकार्य में हमने कई कहानियों के उदाहरण के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है।

जीवन मूल्यों के सार्थक और सजीव अंकन से ही रचना कालजयी एवं दीर्घजीवी हो पाती है। भारतीय जीवनशैली का मूलाधार ही मूल्य है। पौराणिक दर्शनमूल्यों के माध्यम से जीवनतत्त्वों का समग्र विवेचन वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, जैन एवं बौध्द साहित्य में हुआ है। जीवन मूल्य एक समस्त पद है और इसकी व्याप्ति हमारे जीवन में आदि से अंत तक है। मनुष्य जीवन के विशेष अनुभव और घटना उनमें सम्मिलित रहते है। हर एक के जीवन में अनेक स्तर होते है, जीवन के सुख दुख के क्षणों से यह स्तर व्यक्ति के आयु को

एक स्तरता देते रहते है इसी माध्यम से व्यक्ति का अपना जीवन यापन करता रहता है। मानसिक, आर्थिक, सामाजिक आदि स्तरों पर जीवन जीते हुए व्यक्ति अपने परिवेशगत स्थितियों के अवगुंठन में अपने जीवन को आकार देता है।

'वसुधैव कुटुम्बकम जनहिताय' का संकल्प अथवा 'विश्व शांति' की धारणा से ही भारतीय मूल्यों की पहचान पूरे संसार को होती है। भारतीय चिंतन में हिंसा और अहिंसा, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक आदि मूल्यों की धारणा परंपरा से चली आ रही है। समय और आवश्यकता के अनुसार मूल्य परिवर्तित होते हैं। मूल्य बदलने से जीवनपद्धति बदलती है। इक्कीसवी सदी तक आते आते आधुनिक जीवनशैली में मूल्यों की बहुलता हो गयी है। इस दृष्टि से मूल्य की परिभाषा, उसके स्वरूप और प्रकार भी नए रूपों में व्यक्त हो रहे हैं। इक्कीसवी सदी के संदर्भ में मूल्यों के विविध रूप सामने आ रहें हैं। उपन्यासों में इसे किसतरह अंकित किया है इसे इस अध्याय में देखा जाएगा। जीवन के मार्गदर्शक सिध्दांत के रूप में मूल्य मानवी जीवन के सर्वंकष विकास में प्रेरक रहते हैं। इस दृष्टि से जीवन में घटित अनेक प्रसंगो के अनुसार मूल्यों का भी विविध रूपों में परिवर्तन होता है। मूल्यों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया जाता है। मूल्यों के संदर्भ में इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में किसतरह इन प्रकारों के अंतर्गत अभिव्यक्ति हुई है। फँसा आदमी नीचले स्तर पर गिरता जा रहा है। तेजी से परिवर्तित पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्ते फिर एक बार दाँव पर लगे।

वैश्वीकरण और बाजारवादी संस्कृति में हम अपनी संस्कृति भूलते जा रहे हैं। इन उपन्यासों में बड़ी संवेदना के साथ चित्रण हुआ है। हिंसाचार, आतंक, अकेलेपन की समस्या, वृध्दों की समस्या आदि का चित्रण इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में हुआ है। जिस आतंक से हम त्रस्त है वह सिर्फ जिस्मानी नहीं बल्कि मानसिक स्तर पर भी है। जिस 'धर्म' शब्द से ही हमें शांति प्राप्त होती थी, आज वैश्वीकरण के दौर में वही द्वेष एवं शस्त्र का रूप धारण कर रही है। ऐसे समय साहित्यादि कलाएँ, जो हमारे जीवन, संस्कृति जीवन विषयक तत्वों से मूल्यों से जुडी रहती हैं, वही हमारी मानवीयता की धरोहर है। साहित्य याने संस्कृति, मानवता का परिचायक जो इस सौहार्द भावनाओं, संवेदनाओं को सँजोकर रख पाएगा। इस दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा। १९९० के दशक के बाद वैश्वीकरण के

समय से भारतीय परिवेश में पूरी तरह बदलाव दिखाई देता है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थिति में बदलाव दिखाई देता है। विवेच्च उपन्यासों में अपने युगबोध का चित्रण संवेदनशील साहित्यकारों ने कैसे किया है इसका मूल्यांकन इस अध्याय में किया है। इस दृष्टि से इक्कीसवी वी सदी के 'चलती चाकी' सूर्यनाथ सिंह द्वारा लिखउपन्यास में ग्रामसुधार के माध्यमसे दौलतपुर गाँव के बदलते परिवेश का अंकन कैसे किया है तथा मृणाल पांडे द्वारा लिखित 'सहेला रे' उपन्यास में भारतीय संगीत के माध्यम से मध्यकालीन समय के कलाकारों का संगीत प्रेम कैसा रहा इसे व्यक्त किया है। पौराणिक संदर्भ लेकर आधुनिक विचारों को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास 'पंचकन्या' मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखा है। इन उपन्यासों में अभिव्यक्त इक्कीसवी सदी के मूल्य किसतरह मानवीय भावबोध से टकरा रहें है तथा इस तरह के कुछ अन्य उपन्यास भी यहाँ चित्रित किये जायेंगे। साहित्य जीवन का साक्ष्य है। इक्कीसवी सदी के उपन्यासकारों ने बडी सूक्ष्मता से गतिमान जीवन की विसंगति, विडंबनाओं को यथार्थ की भावभूमि पर उतारा है। नारी विमर्श, दलित विमर्श, उपभोक्ता प्रवृत्ति, आतंक हिंसा आदि विषयों का चित्रण नए तेवर के साथ उपन्यासकारों ने किया है।

आधुनिक साहित्य में मूल्य शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्तर पर किया जा रहा है। मानव व्यवहार के मानदंड इसके आधार पर नापे जा रहें हैं। मूल्यों का प्रारंभ समाजद्वारा अपनी आवश्यकतानुसार होता है। मानव मूल्य तथा साहित्यिक मूल्य एक दुसरे से जुडे है। क्यों कि साहित्य समाज का दर्पण कहा गया है। साहित्य में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया जाता है। समाज के विकास के साथ पुराने विचारों को कालबाह्य किया जाता है और नए विचारों के साथ नए मूल्य गढ़े जाते हैं। प्राचीन और नवीन मूल्यों की टकराहट से उत्पन्न परिस्थिति में आम आदमी तथा मनुष्य की जीजिविषा संघर्षमय बन जाती है। विवेच्य उपन्यासों में बदलते मूल्यों का चित्रण कैसे हुआ है इसका अध्ययन किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि हमारी भारतीय परंपरा में एकल परिवार की संकल्पना थी परंतु आधुनिकता की इस स्थिति में वृध्दों को घर से बेदखल किया जा रहा है। काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में वृध्दावस्था का चित्रण इसी रूप में किया गया है। प्रस्तुत उपन्यासों में अपनी नई पीढी को अमेरिका में

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -5
March
2024

बसते देख रग्घू मास्टर को कचोट है कि, "कभी सोचा था कि एक छोटे से गाँव से लेकर अमेरिका तक फैल जाओगे ?"[6] भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से किया गया मूल्यों का फर्क यहाँ नजर आता है। 'शाम की झिलमिल' में वृद्ध जीवन की उपेक्षा बदलते परिवेश में किसतरह हुई है इसका विश्लेषण किया जाएगा।

पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीयों के जनजीवन पर किस कदर हावी हो चुका है इसे स्पष्ट करने की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यासकारों ने जिन पात्रों के द्वारा इसमें अभिव्यक्त किया है उन पात्रों का संक्षेप में परिचय भी इसमें होगा। इक्कीसवी सदी की परिवर्तनशीलता के साथ जीवन मूल्यों में हो रहें संक्रमण से अभाव, निर्धनता में जीता आदमी स्वाभाविक रूप से कृपण और स्वार्थी हो रहा है। मानवीय संवेदनाएँ लुप्त हो रही है। स्वार्थी एवं क्रूर बनकर वह जी रहा है। ऐसे ही विवेच्य उपन्यासों के पात्र व्यवस्था की विकृति की लक्ष्मण रेखा लाँघ रहें है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय आम आदमी ने रामराज्य का सपना देखा था लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। इक्कीसवी सदी तक पहुँचने के पश्चात भी सुजलाम सुफलाम् भारत का सपना बिखेरते दिखाई दे रहा हैं। आम आदमी गरीब महंगाई आदि के तहत दिन-रात खटते रहे है। उसने मन में शांतिपूर्ण एवं सुखद जीवन के जो सपने संजोए थे वे चूर-चूर हो गए। नेताओं के व्यक्तव्य, खोखले वायदे निरर्थक बन गए हैं। इस मोह भंग के कारण जो भारतीय मूल्य महत्वपूर्ण लगते थे उसमें कहीं कही दरारे पडने लगी हैं। धर्म का रूढिवादी रूप आज बदल चुका है। अंधश्रध्दा से दूर रहकर अलौकिक सत्ता के प्रति भी संदेह निर्माण हो रहा है। धर्म के नाम पर जो आडंबर, अबलाओं का शोषण हो रहा है। इस सदी के पात्रों की सोच में आए परिवर्तन को तथा उसका विवेक न्याय अन्याय का विश्लेषण कर रहा है तथा अपने युगीन परिवेश की विषम परिस्थिति में ये पात्र किस तरह इस युग की पहचान करा रहे है इसको प्रस्तुत किया गया है।

21वीं सदी की कहानियों में चित्रित समस्याओं का समाधान तथा भ्रष्ट व्यवस्था, पूँजीवादी व्यवस्था में आम आदमी का संघर्ष भारतीय जीवन मूल्यों का क्षरण तथा नई

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -5 March 2024

संवेदना के साथ चारों ओर की विसंगति, तनाव के साथ जूझने वाले शोषित एवं आम, मध्यवर्ग का चित्रण यथार्थ की भावभूमि पर हुआ है इसका विश्लेषण प्रमुख कहानियों के माध्यम से किया गया है कि जिस तरह मूल्यों में बदलाव हुआ है। नये-नये मूल्य आये है। अच्छे मानवीय मूल्यों के विघटन की जो समस्याएँ निर्माण हुई।

"इक्कीसवी सदी तक आते-आते जटिल जीवन की यथार्थता को कहानियों के फलक पर घटनाओं और पात्रों के माध्यम से स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया जा सका है।"[7] मानव जीवन का बहुआयामी चित्रण युगीन समस्याओं, अनुभूतियों तथा संवेदनाओं का व्यापक रूप इन उपन्यासों में किया गया है। नैतिक मूल्यों के बदलते मापदंडो ने कहानी को सबसे अधिक प्रभावित किया है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के भीतर अपने अस्तित्व को साकार करता है। समाज की अन्तःक्रियाएँ तथा व्यवस्था मूल्यों के द्वारा अनुशासित होती है। समाज मूल्यों के माध्यम से ही व्यक्तित्व का निर्माण करता है। व्यक्ति के सामाजिक जीवन में उसके उद्देश्य, संकल्प, नीतियों, आदर्शों व प्रतिमानों का निर्धारण मूल्यों के द्वारा ही होता है। परिणामतः जीवन के में संघर्ष की भावना व असंतोष उत्पन्न होने के कारण युवावर्ग सभी सामाजिक, सांस्कृतिक नैतिक, और धार्मिक संस्कारों को छोड़कर आगे बढ़ना चाहती है। पीढ़ियों के अर्न्तद्वन्द्व व संघर्ष से वैचारिक तथा यथार्थ रूप में मूल्यों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होकर मूल्य संक्रमण की स्थिति उत्पन्न हो जाती है फलस्वरूप नए मूल्यों की सृष्टि होती है। कालगत परिवेश के साथ-साथ जीवन की परिस्थितियों, आवश्यकताओं में परिवर्तन होता है जिसके कारण समाज तथा व्यक्ति विशेष की धारणाओं और दृष्टिकोणों में परिवर्तन उत्पन्न होने पर मूल्य आधारित धारणाएँ व दृष्टिकोण के मापदंड भी बदलते है। इन परिस्थितियों के रूपांतरण के कारण सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक व सांस्कृ तिक मूल्यों में परिवर्तन होता है। अतः प्रचीन मूल्यों के प्रति संघर्ष से मूल्य विघटन व मूल्य संक्रमण के कारण समकालीन उपन्यासों में नव मूल्यों का प्रतिष्ठित होना स्वाभाविक है। प्रभा जी के उपन्यासों में परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक मूल्यों का प्रादुर्भाव हुआ है। जिसका अध्ययन प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से किया जाएगा।

प्रत्येक समाज की अपनी कुछ मान्यताएँ व नियम विध्यमान होते है। जिन्हें स्वीकारना प्रत्येक सामाजिक का कर्तव्य होता है तथा उन्हीं नियमों के अनुरूप आचरण व्यक्ति का धर्म होता है। प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में समाज के दोनों स्तर के यथार्थ को उजागर किया है। प्रभा जी ने सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय, सर्व सम भाव, उच्च आदर्शों की स्थापना के लिए एक स्वस्थ, स्वच्छ, उच्चादर्श युक्त प्रगतिशील समाज की कल्पना अपने उपन्यास के द्वारा की है। प्रभा जी के उपन्यास साहित्य में व्यक्त मूल्य धरती पर पड़ने वाली उन प्रकाशमयी किरणों के समान है, जो अंधेरे को कोंने कोंने से खींचकर समाप्त करने का प्रयास करती है। 21वीं सदी का साहित्य अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करता हुआ, नए सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा मानवीय धरातल पर करता है। इनका उपन्यास साहित्य मूल्यों के गहरे सागर में डूबकी लगाता हुआ प्रतीत होता है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। व्यक्ति चेतना के कारण सामाजिक जीवन का प्रत्येक पक्ष परिवर्तित हो रहा है। आधुनिकता के दौर में समाज परिवर्तित होकर एक नई दिशा ग्रहण कर रहा है। शहरी व ग्रामीण समाज में मान्यताओं, धारणाओं तथा व्यवहार मूल्यों में तनाव व आर्थिक विषमता के उत्पन्न होने से परिवर्तित हो रहे है। समाज में व्यक्ति ने प्राचीन के स्थान पर आधुनिक विचारों का प्रतिपादन किया है। आधुनिकता के बोध के कारण मूल्य संक्रमित होकर नवीन मूल्यों का प्रादुर्भाव हो रहा है। 21वी सदी के लगभग सभी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में समाज में मूल्यों के परिदृश्य की स्पष्ट झाँकी प्रस्तुत की है। प्रभा खेतान महिला कथाकार जो 21वी सदी की लोकप्रिय कथाकार है उन्होंने अपने उपन्यास में मारवाडी समाज का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। मारवाड़ी समाज के रिश्तों की उधेड़बन का सजीव चित्रण किया है। उन्होंने मारवाड़ी समाज में बेटी के जन्म की निस्सारता को प्रकट किया। मारवाड़ी समाज में बेटी के जन्म होनें पर उसे बड़ा उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है। उसे अपनों के स्नेह व प्यार से वंचित रहना पड़ता है। 'कैसा अनाथ बचपन था अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटो उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले।"[8] छिन्नमस्ता' उपन्यास में मानवीयता के मूल्य को गहरी चोट पहुंचाई है। लादूराम खेतान की उनके मित्र द्वारा हत्या कर दी जाती है क्योंकि वह व्यापार में अपना हिस्सा मांगते है- "दूसरे दिन अखबार में सुर्खिया थी प्रसिद्ध उद्योगपति लादुराम खेतान की

रहस्यमयी मौत।"[9] प्रभा जी ने अपने उपन्यास में मारवाड़ी समाज की परम्पराओं व रीति-रिवाजों का भी वर्णन किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि इसी तरह इस कालावधि के सभी कथाकारों ने उनके परम्परागत मूल्य के पालन का भी निवेदन किया है। समाज के नारी के प्रति दकियानूसी सोच अर्थात उसके सजने-सवरने व आत्मनिर्भर न होने वाली सोच को उजागर करते हुए यह बताया कि पारिवारिक मूल्यों के विघटन ने सर्वाधिक प्रभावित संयुक्त परिवार को किया है। करुणा, प्रेम, आत्मीयता, सम्मान व सहयोग आदि मानवीय मूल्यों के स्रोत माने जाने वाले परिवार का स्वरूप विघटित होता जा रहा है। आज के बदलते परिवेश में औद्योगिकरण, व्यक्तिवादिता, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, आर्थिक परिपेक्ष्य ने परिवार के विघटन में अहम भूमिका निभाई है। कहानीकारों ने अपनी कहानियों में परिवार विघटन के कई रूपों के दर्शन कराये है।

संदर्भ सूची

1. बदलते जीवन-मूल्य और हिंदी उपन्यास/ज्योत्सना प्रसाद/बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी/पृष्ठ स 54
2. बदलते जीवन-मूल्य और हिंदी उपन्यास/ज्योत्सना प्रसाद/पृष्ठ स. 65
3. शिक्षा, साहित्य और मानवीय मूल्य/डॉ.जनार्दन वाघमारे/पृष्ठ स.102
4. शिक्षा, साहित्य और मानवीय मूल्य/डॉ.जनार्दन वाघमारे/पृष्ठ स.98
5. बदलते जीवन-मूल्य और हिंदी उपन्यास/ज्योत्सना प्रसाद/ पृष्ठ स.90
6. रेहन का रग्घू/काशीनाथ सिंह/पृष्ठ स.23
7. मानव मूल्यों की लघुकथाएँ/सुकेश साहनी व रामेश्वर काम्बोज/पृष्ठ स.206
8. मानव मूल्यों की लघुकथाएं/सुकेश साहनी व रामेश्वर कम्बोज/पृष्ठ स.216
9. छिनमस्तता/प्रभा खेतन/पृष्ठ स.56